2150
765
Н

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 765

52/2011

IMPERIAL RECORD ... 1930

॥ बन्देमातरम् ॥

शहीदों का संदेश

अर्थात

गांधी का जंग

ट्रैक्ट नं० ४

संग्रहकर्ता व प्रकाशक

मोहरचन्द्र 'मस्त' कंवाली ज़िला गुड़गांव।

सोलएजन्ट—गिरधारीलाल बुकसेलर

खारी बावली देहली।

मूल्य केवल -)

नारायणदास गुप्त के प्रबन्ध से द्वादशश्रेणी प्रेस, फतेहपुरी, देहली में छपा।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 765
Date 20.12.71
GOVT. OF INDIA
891.431
G 361 Sh

विजय होगी नं० १

उठो अब सत्य पर भाई विजय होगी विजय होगी ।
कटा दो अपना सर भाई विजय होगी विजय होगी ॥
अगर वह गनमशीनों की धमकियां तुम को देते है ।
बढ़ादो बढ़ के निज छाती विजय होगी विजय होगी ॥
अगर वह हथकड़ी बेड़ी दिखायें तो दिखाने दो ।
करो कर्तव्य सुखदाई विजय होगी विजय होगी ॥
मेरे प्यारे शहीदो अब नहीं है काम देरी का ।
दिखा दो चाल रौताई विजय होगी विजय होगी ॥
अगर इस जंग में चूके समझ लेना बुरा होगा ।
न पिछड़ो देख कर खाई विजय होगी विजय होगी ॥
इधर है शेर गांधी जी उधर है शासकों का दल ।
बनो मोहन के अनुयाई विजय होगी विजय होगी ॥

नींद से जाग उठो नं० २

ऐ हिन्दू भाई जागो किस नींद सो रहे हो ।
वक्ते अज़ीज़ क्यों तुम बेकार खो रहे हो ॥
मस्त शराब होकर बरबाद हो रहे हो ।
क्यों आब आतशीं में बेड़ा डुबो रहे हो ॥१॥
बदरस्मियों में अपनी दौलत लुटा लुटा कर ।
तुम अपने हक़ में कांटे दिन रात बोरहे हो ॥२॥
इज़्ज़तो कमाल खो कर ज़र और माल देकर ।

इफ़लास की बदौलत नाशाद हो रहे हो ॥३॥
मै पी के लाख का घर सब खाक करदिया है।
अब अपनी जान से भी क्यों हाथ धोरहे हो ॥४॥
कस्बो कमाल छोड़ा मुँह इल्मो फन से मोड़ा।
अब नंगे कौम हो कर गैरत भी खो रहे हो ॥५॥
तुम अपने हाथ लाये हो सब बलायें सर पर।
रंजो अलम के पत्थर तुम आप ढो रहे हो ॥६॥
अग़ियार तुम से कोसों आगे निकल गये हैं।
तुम मलके दस्ते-हसरत क़िस्मतको रोरहे हो ॥७
असलाफ की बुज़ुर्गी का है गरूर बेजा।
बेफायदा गुज़िस्ता अज़मत को रो रहे हो ॥८॥
खुद करके कुछ दिखाओ यह देखना है हमको।
यों कहते सुनते रहकर क्यों वक्त खोरहे हो ॥९॥
यह गैब की निदा है यह वर्क की सदा है।
ऐ अहले कौम जागो किस नींद सोरहे हो ॥१०

मन तरङ्ग नं० ३

मिटेंगे देश पर अपने यही दिल में समाई है।
करें आज़ाद भारत को यही एक धुन समाई है ॥
नहीं है ज्ञात क्या उनको कि भारत वीर भूमी है।
करें बरबाद हम उनको कि जिनसे दुश्मनाई है ॥
कटायेंगे गला बेशक मगर यह ध्यान में रखना।
मिटेंगे हम मिटा करके शपथ हमने यह खाई है ॥
है क्या शै जेल और फांसी डराते हो हमें जिनसे।

कटै आदर्श पर तिल तिल न वह भी दुःखदाई है ॥
करो जुल्मो सितम बेशक मगर यह भूल मत जाना ।
नहीं अपमान सह सकते जो भारत के शौदाई हैं ॥

शहीदों का संदेश नं० ४

दिन खून के हमारे, प्यारो न भूल जाना ।
खुशियों में अपनी हमपर आंसू बहाते जाना ॥
सैयाद ने हमारे चुन चुन के फूल तोड़े ।
वीरान इस चमनमें अब गुल खिलाते जाना ॥
गोली को खाके सोये जलियान बाग़ में हम ।
सूनी पड़ी क़ब्र पर दिया जलाते जाना ॥
हिन्दू और मुसलिमों की, होती है आज होली ।
बहते हमारे रङ्ग में दामन भिगोते जाना ।
कुछ कैद में पडे हैं हम क़ब्र में पड़े हैं ।
दो बूंद आंसू इन पर 'प्रेमी' बहाते जाना ॥

सत्याग्रह का नया नं० ५

खादी की धोती खादी का कुरता खादी की टोपी सिलायेंगे हम
खादी व गाढ़ा मुफ़ीद अपने, इसी को अब काम लायेंगे हम ॥
जगे हैं मुद्दत के बाद फिर से, पियारा चरखा चलायेंगे हम ।
बला ये फैशन को छोड़ करके, स्वदेशी खुद को बनायेंगे हम ॥
कमर व कंधे व अपनी गरदन, की सख्त बंदिश छुडायेंगे हम ।
व खाल मुरदों की अपने तन से, अब एक दम ही उठायेंगे हम ॥
अहिंसा सच शान्ति न्याय का वह, पुनीत डंका बजायेंगे हम ।

कि जिस से हिंसक अनर्थ कारी, जीवों के दिलको कपायेंगे हम।
शराब खोरी व गंदी आदत, वतन से अपने मिटायेंगे हम।
बनाय हम को जो उच्च मानव, वह शिक्षा शैली चलायेंगे हम॥
दिलों से अपने हटाके नफरत, वो प्रीत मन में जमायेंगे हम।
कि झगड़े जो कुछ भी होंगे पंचायती फैसले करायेंगे हम॥
यह गांठ बांधी न भूल कर भी, किसी के दिलको दुखायेंगे हम।
खुशी से कोई हमें सताये, बशौक गरदन झुकायेंगे हम॥
वतन के खातिर से जेलखाने, की कोठरी को बसायेंगे हम।
सपूत भारत के मरते मरते, स्वदेश की जय मनायेंगे हम॥

झनकार होती है नं ६

ये क्यों बेड़ी की चारों ओर से झनकार होती है?।
नये सर से हमारे सर पै क्यों तलवार होती है?॥
अजब यह वक्त आया है कि बच्चे मुस्कराते है।
धड़ाधड़ गोलियों कि उन पै जब बौछार होती हैं॥
अजब गांधी का यह मंतर सभी के दिल में बैठा है।
"गुलामों की जहां में जिन्दगी बेकार होती है"॥
वह ज्यों ज्यों राह में कांटे बिछाते जाते हैं उनके।
अजब हैरत है उनकी तेज ही रफतार होती है॥
वहम ऐसा समाया है टटोला करते हैं चरखे।
कहीं तकुवे में कोई ऐसी वैसी धार होती है॥
नज़र दुनियां में ऐसे ही नज़ारे आने लगते हैं।
कौम जब ज़ुल्मियों के ज़ुलम से बेज़ार होती है॥

कहां ईमान ? खुदगरज़ी के बादल छाये रहते हैं।
किसी के मुल्क में जब गैर की सरकार होती है॥
अरे तूफान जोशे जुल्म के तू देखते रहना।
बहुत ही जल्द किश्ती हिंद की अब पार होती है॥

हम गुलाम नहीं ७

किसी के आका नहीं हैं तो हम गुलाम नहीं।
झुका के सर को करेंगे कभी सलाम नहीं॥
जो चापलूस है करते रहें हुज़ूर हुज़ूर।
हम हक परस्तों को कुछ आप से है काम नहीं॥
तुम्हारे वादों को हम देख चुके हैं वर्षों।
हमें है देखना अब सुबह शाम नहीं॥
उमीद उनको हो जो तालिबे खिताब रहें।
हमें तो लेना है सरकार कुछ इनाम नहीं॥
बिछाया चाहें अगर अब हज़ार हिरफित से।
बिछेगा आप का अब इस चमन में दाम नहीं॥
गया ज़माना वो लूटो खसोट का साहेब।
जनाब पायेंगे अब इस जगह क़दाम नहीं॥
कहां वह दिन कि मुझी से थी आपको नफरत ?।
अब आज आप से करता कोई कलाम नहीं॥
हमें भी फिक्र नहीं सर रहे रहे न रहे।
तुम्हारी तेग़ को ज़ालिम अगर नियाम नहीं॥
यही है फिक्र कि तुम साथ मेरे रह कर भी।

जहां पर जावंगे अफ़सोस नेक नाम नहीं ॥
हमेशा बात खरी लगती है बुरों को बुरी।
पै रास्त बाज़ों के लगती है मुंह लगाम नहीं ॥
जफ़ा वो ज़ुल्म बहादुर यहां यही जो रहा।
रहेगा आपकी अब इस जगह क़याम नहीं ॥

मांगिये अब खैर साहब कोट की पतलून की नं० ८

चल नहीं सकती यहां पर अब तुम्हारी दून की।
मांगिये अब खैर साहब कोट की पतलून की ॥
देखते रहना पड़े कम ख्वाब बस ख्वाब आप।
हो मयस्सर एक भी लच्छी न तुमको ऊन की ॥
केक बिस्कुट और डबल रोटी उड़ालो कूद कूद।
फ़िक्र बच्चों को पड़ेगी एक चुकटी चून की ॥
फिर न मंसूरी व शिमला की मिले आबो हवा।
जंगलों में गर्मियां तुमको सतायें जून की ॥
दिल हिला देने वाला मंजर था वह जलियां बागका।
ज़ालिमों! तुमने बहाई नदियां वहां पर खून की ॥
मिल गये मुसलिम मजे से आर्य, हिन्दू, जैन, सिक्ख।
बन गई सैंफ देख लो गूना गून की ॥
मक्र से जब से कुत ले गये वह मालोजर।
खत्तियां खाली हुई सब हिन्द के कानून की ॥
फ़िक्र है तुम को टकों की बेचते इन्साफ़ को।
है दुकांदारी का ज़रिया हर दफ़ा कानून की ॥

बे तकल्लुफ, साफ गो, बे लौस कहता खूबतू।
हासिदों के दिल पै शर्माधाक है मजमून की॥

गांधी महमा नं० ६

गांधी तू आज हिन्द की एक शान बनगया।
सारी मनुष्य जाती का अभो मान बन गया॥
तू सत्य अहिंसा दया निस्वार्थ त्याग से।
इस आज मृत्यु लोक में भगवान बनगया॥
तेरा प्रभात्र सादगी हस्ती को देखकर।
दुशमन भी बेज़बान हो हैरान बनगया॥
तेरी नसीहत बातों में जादू का असर है।
जिसको लगी हवा तेरी इनसान बनगया॥
तू दोस्त है हर कौम का हर दिल अजीज है।
सारा जहान तेरा कदरदान बनगया॥
वो हिन्द आज उठ न सके वाय से तकदीर।
फिर भी स्वराज लेने का सामान बनगया॥
धिक्कार है 'माधव' हमें तैंतीस क्रोड़ को।
तुझसा फ़कीर जेल का महमान बनगया॥

राष्ट्रीय देबियां नं० १०

झण्डा आज़ादी का निकलीं हैं यह लेकर देबियां।
मर्द बुज़दिल बनगये और ज़ेग मेनर देवियां॥
ये जवां मर्दो तुम्हें कुछ शर्म आनी चाहिये।
जेल जाने के लिये उट्ठी हैं अकसर देवियां॥

रूह लक्ष्मीबाई और दुर्गावती की इन में है।
हैं चली सत्याग्रह करने जो उठ कर देवियां॥
तोप और बन्दूक से यह अब ज़रा डरती नहीं।
क्या डरेंगी फिर पुलिस के खाके हंटर देवियां॥
"शोख" देवी शक्ती उनकी आत्मा में है जरूर॥
लौटेंगी जेलों से यह स्वराज लेकर देवियां॥

रसिया नं० ११

प्रीतम चलूं तुम्हारे संग, जंग में पकडूंगी तलवार।
गाढ़े के सब वस्त्र बनाओ, सारी पब्लिक को पहनाओ॥
और मैं करूं सूत तय्यार, ॥ जंग में॥
ऊंच नीच सब को बतलाओ, गांधी का पैग़ाम सुनाओ।
मैं भी करूं नमक तैय्यार॥ जं०
जेल तोप से नहीं, डरूंगी बिना काल के नहीं मरूंगी॥
गोली खाने को तैय्यार॥ जं०॥
भारत को आज़ाद करूंगी, दुश्मन को बरबाद करूंगी॥
कुछ मत सोच, करो भरतार॥ जं०॥
असहयोग की फौज सजाओ कांग्रेस की तोप लगाओ॥
दुश्मन भगें समन्द्र पार॥ जं०॥
गांधी जी बन रहे क़लन्दर, शशो पन्ज में पड़ गये बन्दर॥
देखो कहा करे करतार॥ जं०॥
अब गांधी ने कदम बढ़ाया, गवर्मेंट का दिल दहलाया॥
देवी हो रही हैं तैय्यार॥ जं०॥
आज़ादी की छिड़ी जंग अब, बनो सरोजनी सत्यवती सब॥

बहनो हो जावो हुशियार ॥ जं० ॥
यह रसिया गा २ के सुनावे, जोश ज़नानों को भी आये ॥
वर्माजी तैय्यार ॥ जं० ॥

(लेखकः- श्री स्वामी नारायणानंदजी अख्तर)

जिएं तो स्वदेशी बदन पर बसन हो, मरें भी अगरतो स्वदेशी कफ़न हो ॥ टेक ॥ पराया सहारा है अपमान होना, ज़रूरी है निज शान का ध्यान होना, है वाजिब स्वदेशी पै कुर्बान होना, इसी से हैं सम्भव समुत्थान होना, लगन में स्वदेशी की हर मर्दोज़न हो । मरें भी अगर ० ॥ १ ॥ निछावर स्वदेशी पै कर मालोज़र दो, स्वदेशी से भारत का भण्डार भर दो । रहें चित्र से वह चकाचौंध कर दो, दिखा पूर्वजों के लहू का असर दो । स्वदेशी हो सजधज स्वदेशी चलन हो ॥ मरें भी अगर ० ॥ २ चलो इस तरह अपना चर्खा चलादो, मनों सुत की ढेरयां तुम लगादो । बुनों इतने कपड़े मिलों को छका दो, जमादो स्वदेशी का सिक्का जमा दो । स्वदेशी हो गुल व स्वदेशी चमन हो ॥ मरें भी अगर ० ॥ ३ ॥ न अतलस न मख़मल की हो चाह तुमको, कपट सिंधु की मिल गई थाह तुमको । न अब कर सकेंगे वह गुमराह तुमको, किसी की रही कुछ न परवाह तुमको । फ़िदाए वतन अपना तन प्राण धन हो ॥ मरें० ४ ॥ उठो कर्मवीरों तुम्हें कौन भय है, स्वदेशी का संग्राम भी शांतीमय है । प्रथा पाप की पाप में आप लय हैं, विजय है विजय है, तुम्हारी विजय है । स्वदेशी हो पूजन स्वदेशी भजन हो । मरें भी अगर तो० ॥ ५ ॥ समर सत्व का चोर व ठान दो

तुम, किसी के प्रलोभन में मत कान दो तुम। खुशी से स्वदेशी पै दे जान दो तुम, बने जिस तरह मां को सम्मान दो तुम। स्वदेशी हो जीवन स्वदेशी मरन हो। मरें भी अगर तो ०॥ ६ बनों कर्मयोगी न तुम कर्म छोड़ो, गुलामी की जंजिर चर्खे से तोड़ो। मुसीबत उठाओ मगर मुंह न मोड़ो, तपोबल से अन्याय का गर्व तोड़ो। स्वदेशी हो पोषण स्वदेशी भरण हो। मरें भी अगर तो ०॥ ७॥ तुम्हीं तो स्वदेशी के हो आज भ्राता, तुमहीं देश के भाग्य के हो बिधाता। तुम्हीं पर है सौ जां से कुर्बान माता, तुम्हें फिर न क्यों ध्येय का ध्यान आता। जो साधन स्वदेशी हो संकट समन हो। मरें भी अगर तो ०॥८॥ करो प्रण कि आज़ाद होकर रहेंगे, जहां में कि बरबाद होकर रहेंगे। सितमगर ही या शाद होकर रहेंगे, कि हम शाद्दो आबाद होकर रहेंगे। स्वदेशी हो 'अख्तर' स्वदेशी कथन हो। मरें भी अगर तो ०॥ ९॥

गरीबों की पुकार नं० १३

सहेंगे इन कलेज़ों पर ये अत्याचार हम कब तक?।
तुम्हारी मार के बदले करेंगे प्यार हम कब तक?॥
तुम्हारी मांग के बदले दिया हमने ज़िगर का खूं।
अरे ज़ालिम निचोड़ें सूखे दिल हरबार हम कब तक?॥
भरा जिस दिल में तेरा प्यार था उस पै ही चोटें कीं।
भला बतला रहें रोके दिली गुब्बार हम कब तक?॥
दिया बदला हमारी नेकियों का बस बुराई से।

बदी के काम से तेरे न हों बेजार हम कब तक ? ॥
हमारे नन्हे बच्चों की मुफ्त में जान तूने ली।
बहाते ही रहेंगे आसुओं की धार हम कब तक ? ॥
हैं आखिर आदमी हम भी हमें भी जोश आता है।
सहैं मानिन्द मुरदों के मुफ्त की मार हम कब तक ?।
नहीं है अब यकीं हमको तुम्हारे झूँठे वादों में।
तुम्हारी मीठी बातों में फसें ए यार हम कब तक ?।
नहीं कुछ बहस इससे है कि हम बहशी है पागल हैं।
छोड़ दे गैर के हाथों में निज अधिकार हम कबत क ? ॥
हमारा जन्म का अधिकार हम निज राज्य लेलेंगे।
गुलामों की तरह बोलें "हुकुम सरकार" हम कब तक ? ॥
मनोहर मोहनी मूरत के कब मोहन दरश होंगे ?।
तेरे प्रिय देशवासी हो सहें दुख भार हम कब तक ? ॥

प्रेमी हो बालमा नं० १४

मेरा टूटे न चरखे का तार प्रेमी हो बालमा
सब काम काज करके मैं चरखा चलाउंगी।
करघे पे बैठ करके मैं कपड़ा बनाऊंगी ॥
करूं चादर वो तोशक तयार-प्रेमी हो बालमा
चौसठ करोड़ ज़र न विलायत को जायगा।
भारत के भूखे भाइयों के काम आयेगा ॥
लंका शायर के खायें पछार-प्रेमी हो बालमा
चरखा छुड़ा के मुल्कको नंगा बना दिया।
चरखे का मंत्र गांधी ने फिर से बतादिया ॥

हमारा चरखा ही करेगा सुधार-प्रेमी हो बालमा
बरबाद करदूं मुल्क को तोपों की मार से।
इंगलैण्ड को रुला दूंगी चरखे के तार से॥
मेरा तकला हो जायेगा पार-प्रेमी हो बालमा
चरखा चलाइये तो करोड़ों का लाभ हो।
इंगलैण्ड के जुलाहों के पेटों में भी खाब हो॥
लूटें भूखे मजदूर बज़ार-प्रेमी हो बालमा
करसक्तो कोई कौम न इसकी बराबरी।
चरखा-सुदर्शन चक्र है शर्मा जलेसरी॥
आये भारत में फिर से बहार-प्रेमी हो बालमा
हिन्दू और मुसलिम मेल से रहते रहें अगर
ताकत किसी की है नहीं छेड़े हमें अगर
सब मेल से होवेंगे पार-प्रेमी हो बालमा

बालम से फरियाद नं० १५

मत लाइयो चुदरियां हमार विदेशी हो बालमा।
है हुक्म गांधी का अब चरखा मंगाइये।
कपड़ा बनाने के लिये करघा भी लाइये॥
करो देशी पै तन मन निसार-विदेशी हो बालमा।
दौलत गई सब गैर मुमालिक को हमारी।
बाकी रही है अब उसकी भी जाने की त्यारी॥
फिर रोओगे धुन २ कपार-विदेशी हो बालमा।
कुरते फितूरी मिरजई देशी बनाइये।

बच्चों को फैल्ट कैप न हरगिज पिन्हाइये ॥
बचे रोज़ाना सत्तर हजार-विदेशी हो बालमा।
ज़ेवर मेरा कर दीजिये गांधी के हवाले।
जिससे वह वीर हिन्द की इज़्ज़त को बचा ले॥
इन्द्र वर्मा की है ये पुकार-विदेशी हो बालमा।

फांसी के तख़्ते पर देशभक्तों के मनोभाव नं० १६

कहते हैं अलविदा अब हम इस जहान को।
जाकर खुदा के घर फिर आया न जायगा॥
अहले वतन अगरचे हमें भूल जायेंगे।
अहले वतन को हमसे भुलाया न जायगा॥
जुल्मों सितम से तंग न आयेंगे हम कभी।
हम से सरे नियाज़ झुकाया न जायगा॥
इस से ज्यादा और सितम क्या करेंगे वह।
इस से ज्यादा उन से सताया न जायगा॥
हम ज़िन्दगी से रूठ कर बैठे हैं जेल में।
अब जिन्दगी से हम को मनाया न जायगा॥
यह सच है मौत हमको मिटा देगी दहर से।
लेकिन हमारा नाम मिटाया न जायगा॥
हमने लगाई आग है जो इन्कलाब की।
इस आग को किसी से बुझाया न जायगा॥
यारो है अब भी वक्त हमें देख भाल लो।
फिर कुछ पता हमारा लगाया न जायगा॥
आज़ाद हम कर न सके अपने मुल्क को।
खजर यह मुँह खुदा को दिखाया न जायगा॥

नालाए बुलबुल नं० १७

देदे मुझे तू जालिम मेरा यह आशियाना।
आरामगाह है मेरी मेरा बहिश्त खाना॥
उसके दीखाके टुकड़े बदख्वाह बन गया तू।
मुफलिश समझ के जिस मैं दिलवाया आबोदाना॥
मेहमां बना तू जिसका जिसने पनाह पाई।
अब कर दिया उसी को तूने है बेठिकाना॥
उसके ही बाग मैं तू उसके करा के बच्चे।
मुनसिफ भी बनके खुद ही तू कर चुका बहाना॥
दर्दे जिगर से लेकिन चीखूंगी जब मैं हर दम।
गुलचीं सुनेगा मेरा पुर दर्द यह फिसाना॥
सोजे निहां की बिजली सर पर गिरेगी तेरे।
जालिम तू मर मिटेगा बदलेगा यह जमाना॥
मुझको न इस तरह का तब कुछ मलाल होगा।
गुलजार फिर बनेगा अशरत का कार खाना॥

लहर नं० १८

सुना है तेज करते हैं दुबारा धार खंजर की।
करेंगे आजमाइस क्या मुकर्र वह मेरे सरकी॥
सबब पूछा तो यों बोले नहीं जाहिर खता कोई।
मगर कुछ दीख पड़ती है शरारत दिलके अन्दर की॥
उजाड़े घोंसले कितने चमन बरबाद कर डाले।
शरारत उनकी नस २ में भरी है खूब बन्दर की॥
चलेंगे कब तलक देखें यह बन्दर घुड़कियां उनकी।
नचावेगी उन्हें भी एक दिन लकड़ी कलन्दर की॥
मेरे दर्दे जिगर में आह में नाले में सेवन में।
नजर आती है हरसू सूरते जालिम सितम गरकी॥
खमीदा करके गरदन को कहा लेगा जमाई हो।
रह गई कब जरा कातिल में खोली मूठ खंजर की॥

निम्न लिखत पुस्तकें मंगा कर लाभ उठावें ।

अनोखा बिवाह:—इसी जमाने का सच्चा हाल जो कि फूल के मानिन्द ताजा है इस सांगीत में वेद और पुराणों के नाम से अधर्म फैलाने वालों का असलियत फोटू है जिसमें एक साहूकार साठसाला बूढ़ा चौदह वर्ष की लड़की के साथ शादी करता है और बेटी बेचने वाला भी वैदिक धर्मी से लड़की का रुपया लेता है, आखिरी नतीजा उनका क्या होता है वह इसी सांगीत को पढ़ कर मालूम कीजिये, कीमत दो हिस्सों के केवल ।=) छः आने हैं, आज ही अवश्य मंगाकर पढ़िये ।

जेबी जोतिष:—यह पुस्तक मि० टी. एन. खन्ना जी ने बड़ी २ ज्योतिष की पुस्तकों के स्वाध्याय के बाद तैयार की है रोजगार शुरू करना, इम्तिहान देना, सगाई होना, खोई चीज की जांच करना, बीमारी, दिल का फिक्र, गर्भ में लड़का है या लड़की इस तरह के ४० प्रश्नोत्तर बड़े सही तौर से लिखे गये हैं आज ही =) के टिकट भेज कर पुस्तक मंगा लीजिये ।

एक रुपये में घर बैठे १६ पुस्तकें मँगा कर पढ़िये ।

१ गांधी का सुदर्शन चक्र २ गांधी का फौजी ऐलान ३ क्रांती की गीताञ्जली ४ शहीदी संदेश ५ आज़ादी की देवी ६ हिन्दुओं की नोट बुक ७ हीरे की कनी ८ फैशन का झगड़ा ९ नया फैशन १० जन्टिलमैन ११ शार्टीफिकट १२ स्त्री उपदेश १३ पञ्जाबी बहार १४ मजा की सजा १५ गौभजन १६ सत्य उपदेश ।

सिर्फ चार २ आने में टायटिल समेत पुस्तकें, खर्चा माफ

१ गांधी उपदेश २ चटपटा उपदेश ३ आर्य उपदेश ४ स्त्री उपदेश ५ फैशन का पास ६ चढ़ती जवानी ७ इंगलिशटीचर ।

मोहरचन्द "मस्त" साकिन कंवाली जि० गुड़गांव ।

(२) गिरधारीलाल बुकसेलर खारी बावली देहली ।

स्वतंत्र भारतीय गायन

संसार के सर्वश्रेष्ठ महापुरुष, भारतीय स्वतंत्रता के तपस्वी महारथी

महात्मा मोहनदास करमचंद गांधी (नज़र क़ैद)

पता—**मुंशीसिंह रामसिंह बुकसेलर**

हाता नं० ४, मकरावटगंज, कानपुर.